SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी के अपत्याधिकार प्रकरणगत गोत्रापत्यार्थ तद्धित उदाहरणों का अर्थ प्रयोग पर्यालोचन

अभिषेक,
न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, सेक्टर 13, भिवानी, हरियाणा, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अभिषेक,
न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, सेक्टर 13,
भिवानी, हरियाणा, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 10/03/2023
Plagiarism : 01% on 27/02/2023

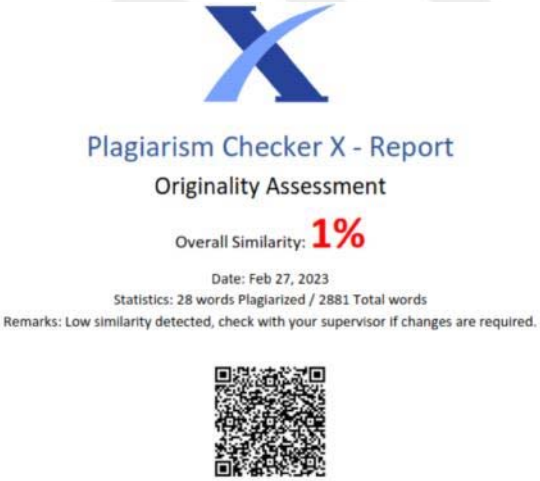

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के अपत्याधिकार नामक तद्धित प्रकरणगत गोत्रापत्यार्थ उदाहरणों के अर्थों का संस्कृत वाङ्गमय में प्रयोग पूर्वक पर्यालोचन किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में केवल गोत्रापत्य अर्थ में आने वाले उदाहरणों का संस्कृत वाङ्गमय में प्रयोग देखा गया है। वर्तमान समय में पाणिनीय व्याकरण अध्ययन परम्परा अत्यन्त शिथिल हो गई है। अतः व्याकरण द्वारा व्याकृत पद का अर्थ क्या है? इसका वाक्य में प्रयोग कैसे होगा? यह अर्वाचीन वैयाकरणों में प्रायः उपेक्षित हो गया है। आज व्याकरण की अध्ययन–अध्यापन परम्परा में प्रक्रियापूर्वक पद–सिद्धि करना ही मुख्य रह गया है। व्याकरण द्वारा सिद्ध साधु शब्दों का प्रयोग गौण व उपेक्षित हो गया है। यद्यपि तद्धित विषयक ज्ञान हेतु अनेक पारम्परिक ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं परन्तु नित्य नूतन विषय की खोज ही विषय में रुचि उत्पन्न करती है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र वैयाकरण सिद्धांत कौमुदी के अपत्याधिकार प्रकरणगत गोत्रापत्यार्थ प्रयोगों के अर्थ पर्यालोचन द्वारा तद्धित प्रकरण के सौन्दर्य को एक नवीन दृष्टि से देखने का प्रयास है।

मुख्य शब्द

वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी, तद्धित, अर्थप्रयोग, अपत्याधिकार, गोत्रापत्य.

1 गार्गीयाः (गर्गस्य गोत्रापत्यम्) गर्गगोत्रजों के छात्रगण, गार्ग्य+छ। गोत्रेऽलुगचि/4–1–89

प्रस्तुत उदाहरण गार्गीयाः का प्रयोग गर्ग के छात्रों के लिये किया गया है, परंतु महाभारतम्/14.92.53(6) में गर्ग प्रोक्त और मत्स्यपुराणम्/195.38 रैवस और वैवस आदि प्रवर के कुलों में से एक गार्गीय के लिये गार्गीय

पद की प्राप्ति हुयी है। गर्ग के छात्रों के लिये गार्गीयाः पद का प्रयोग शोधार्थी को दृष्टिगोचर नहीं होता है।

1. श्रुता मे मानवा धर्मा वाशिष्ठाः काश्यपास्तथा।
गार्गीया गौतमीयाश्च तथा गोपालकस्य च।।[1]
(गर्ग द्वारा कहा गया अर्थ में गार्गीया पद का प्रयोग किया गया है)
2. बालपिः श्रमदागोपिः सौरस्तिथिस्तथैव च।
गार्गीयस्त्वथ जाबालिस्तथा पौष्यायनो ह्यृषिः।।[2]

(गार्गीय भृगु वंश के गोत्रप्रवर्तक ऋषियों के अतिरिक्त अन्य भी विविध प्रवरों से सम्बन्धित अनेक व्यक्ति हुए हैं। उनमें से रैवस और वैवस आदि प्रवर के कुलों में से एक गार्गीय हुये हैं)

2 पैलः (पीलायाः गोत्रापत्यम्) पीला के गोत्र में उत्पन्न सन्तान और उसके अनंतर युवापत्य, पीला+अण्। पीलाया वा/4–1–118

यहाँ अपत्य अर्थ में पैलः पद की प्राप्ति है। प्रस्तुत उदाहरणों में पैल–व्यास जी के एक शिष्य का नाम जो ऋग्वेद के आचार्य थे व वसु के पुत्र थे, भगवान व्यास ने चारों वेदों तथा पांचवे वेद महाभारत का अध्ययन सुमन्तु, जैमिनी, पैल, वैशम्पायन तथा शुकदेव को कराया। अग्निपुराण/277.10 में तुर्वसु वंश के पैल का वर्णन है। मत्स्यपुराण/196.18 में पैल को अंगिरा ऋषि का वंशधर गोत्रकार बताया गया है। निम्न उदाहरणों में आचार्य पैल के लिये पैल पद आया हैः

1 तत्रर्ग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः। वैशंपायन एवैको निष्णातो यजुषामुत।।[3]
2 वेदव्यासः शुकः साक्षान्मैत्रेयोऽथ पराशरः। पैलः सुमंतुर्दुर्वासा वैशंपायन इत्यपि।।[4]
3 पैलः सुमंतुः कण्वश्च भृगू रामोऽकृतव्रणः। मधुच्छंदा वीतहोत्रो कवषो धौम्य आसुरिः।।[5]
4 विश्वामित्रो वामदेवः सुमतिर्जैमिनिः क्रतुः। पैलः पराशरो गर्गो वैशम्पायन एव च।।[6]

अग्निपुराण में वर्णन मिलता है कि तुर्वसु के वंशधरों में से एक राजा शिवि का पुत्र तितिक्षु हुआ उसी तितिक्षु का पौत्र और रुषद्रथ का पुत्र पैल हुआ। यथाः

5 तितिक्षुरुशीनरजस्तितिक्षोस्च रुषद्रयः। रुषद्रथादभूत्पैलः पैलाच्च सुतपाः सुतः।।[7]

3 आङ्गः (अङ्गस्य राजा, आङ्गस्य गोत्रापत्यम्) अङ्गदेश के राजा के गोत्र में उत्पन्न वद्ध और युवा (पिता, पुत्र), अङ्ग शब्द देशविशेष का वाचक है। उस देश के राजा एवं उस राजा का गोत्रापत्य दोनों आङ्ग कहलाते हैं। अङ्ग+अण्। द्वयञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण्/4–1–170

आङ्गः पद यहाँ अङ्गदेश के राजा के गोत्र में उत्पन्न वृद्ध और युवा के लिये प्रयुक्त हुआ है। प्रस्तुत उदाहरणों में भी अङ्गनरेश के लिये आङ्गः पद आया है, यथाः

1 जटासुरो मद्रकाणां च राजा कुन्तिः पुलिन्दश्च किरातराजः।
तथाऽऽङ्गवाङ्गौ सह पुण्ड्रकेण पाण्ड्योड्रराजौ च सहान्ध्रकेण।।[8]
2 सहदेवं तु नकुलो वारयित्वांगमार्दयत्। नाराचौर्यमदण्डाभैस्त्रिभिर्नागं शतेन तम्।।[9]

4 गार्ग्यः (गर्गस्य गोत्रापत्यम्) गर्ग के गोत्र में उत्पन्न सन्तान, गर्ग+यञ्।
गर्गादिभ्यो यञ्/4–1–105

गोत्र परम्परा को स्पष्ट करते हुये या कहे आसान शब्दों में अभिव्यक्त करते हुये वासुदेवशरण अग्रवाल जी ने कहा है किः– घर या कुटुम्ब का बडा–बूढ़ा, वृद्ध (1/2/65) या वश्य (4/1/163) कहलाता था। उसके जीवन–काल में दूसरे लोग चाहे वे किसी भी आयु के हो 'युवा' (4/1/163) कहलाते थे। कुटुम्ब के वृद्ध और युवा सदस्यों में नामों में भिन्न–भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग होता था। गर्ग कुल के वृद्ध या वश्य की संज्ञा 'गार्ग्य' और उसी कुटुम्ब के युवा सदस्यों की 'गार्ग्यायण' होती थी। गार्ग्य और गार्ग्यायण के भेद का सामाजिक मूल्य था। प्रत्येक

कुल को अपनी बिरादरी, जाति या समाज की पंचायत में वास्तविक सत्ता प्राप्त थी। कुल का बडा–बूढ़ा उसका प्रतिनिधित्व करता था। गार्ग्य के जीवनकाल में उस कुल की पगडी गार्ग्य के सिर ही बाँधी जाती थी और वही उस कुटुम्ब का प्रतिनिधि माना जाता था। उसकी मृत्यु के उपरांत उसका सगा बड़ा बेटा जो कल तक गार्ग्यायण था कुल के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से गार्ग्य बन जाता था। इस परिवर्तन को उस बिरादरी के समस्त कुटुम्बों के प्रतिनिधि एकत्र होकर गार्ग्यायण के सिर पगड़ी बाँध कर स्वीकार करते थे और उस दिन से उस कुटुम्ब के लिये वह गार्ग्य कहलाने लगता था। पगड़ी बाँध कर पट्टाभिषेक करने की यह प्रथा आज तक प्रचलित है। पाणिनि ने 'वृद्धो और 'युवा' प्रत्ययों से बनने वाले नामों पर जो इतना ध्यान दिया है, उसका सामाजिक पहलू था और जीवन मे उसका वास्तविक उपयोग और महत्व था। पिता के उपरांत पुत्र उसके स्थान पर अपने कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करने का अधिकारी होता था। किंतु यदि कोई बड़ा–बूढ़ा, दादा, ताऊ या चाचा उस कुटुम्ब में जीवित हो तो अपने पिता की दृष्टि से जिस गार्ग्यायण ने गार्ग्य पद प्राप्त कर लिया था, वह बड़े–बूढ़े ताऊ–चाचा की दृष्टि से गार्ग्यायण ही कहलाता रहता था (वा अन्यस्मिन्स्थविरतरे सपिंडे जीवति 4/1/164)। बिरादरी की पंचायतों मे प्रायः बड़ा–बूढ़ा ताऊ–चाचा ही उस कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता रहता था। बड़े भाई के जीवित रहते हुए सब छोटे भाई 'युवा' कहलाते थे। बड़ा भाई गार्ग्य और छोटे गार्ग्यायण संज्ञा के अधिकारी थे (भ्रातरि तु ज्यायसि 4/1/164)।[10]

गर्ग के अपत्य अर्थ में गार्ग्य पद की प्राप्ति श्रीमद्भागवतपुराणम्/9.21.19 में होती है यथाः

1 गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्यः क्षत्राद् ब्रह्म ह्यवर्तत।
दुरितक्षयो महावीर्यात् तस्य त्रय्यारुणिः कविः।।[11]

अन्य गार्ग्य का वर्णन भी निम्न उदाहरणों में इस प्रकार हैः

2 कस्यचित् त्वथ कालस्य युधाजित् केकयो नृपः। स्वगुरुं प्रेषयामास राघवाय महात्मने।[11]
गार्ग्यमङ्गिरसः पुत्रं ब्रह्मर्षिममितप्रभम्।।[12]
(ब्रह्मर्षि गार्ग्य अंगिरा के पुत्र थे। ये केकय देश के राजा युद्धाजित् के पुरोहित थे)

3 अथ मौहूर्तिकं वृद्धगार्ग्यमाहूय राजा पप्रच्छ क्व विवाहमुहूर्तः।
श्व इति गार्ग्य उवाच।[13]

(यहाँ गार्ग्य एक वृद्ध मौहूर्तिक हैं। जनक ने उन्हें बुलाकर सीता–राम के विवाह का मुहूर्त पूछा था। उनके द्वारा बताए मुहूर्त में ही उनका विवाह हुआ था)

4 कण्वः कात्यायनो राजन् गार्ग्यः कौशिक एव च।[14]
(इंद्र की सभा में सुशोभित गार्ग्य के लिये गार्ग्यः पद का प्रयोग हुआ है)

5 श्यामायनोऽथ गार्ग्यश्च जाबालिः सुश्रुतस्तथा।
कारीषिरथ संश्रुत्यः परपौरवतन्तवः।।[15]
(विश्वामित्र के पुत्र तथा ब्रह्मवादी ऋषि गार्ग्य के लिये गार्ग्यः पद का प्रयोग हुआ है)

5 चारायणः (चरस्य गोत्रापत्यम्) चर का पौत्र, चर+फक्। नडादिभ्यः फक्/4–1–99

चर के गोत्रापत्य अर्थ में चारायण पद की सिद्धि होती है लेकिन संस्कृत साहित्य में शोधार्थी को इस अर्थ में प्रयोग की प्राप्ति नहीं हुई, यद्यपि चारायण पद का प्रयोग प्राप्त होता है जो स्कन्दपुराण में शुनः शेप मुनि के वंशज, कामसूत्र में वर्णित आचार्य व एक अन्य ऋषि के लिये है। यथाः

1 तस्य पुत्रः शुनः पुत्रो बभूव मुनिसत्तमः। चारायणः सुतस्तस्य वभूव मुनिसत्तमः।।[16]
(शुनःशेप मुनि के वंशज मुनि चारायण के लिये चारायणः पद का प्रयोग किया गया है)

2 एतैरेव कारणैर्महामात्रसंबद्धा राजसंबद्धा वा तत्रैकदेशचारिणी का चिदन्या वा
कार्यसंपादिनी विधवा पञ्चमीति चारायणः।।[17]
(आचार्य चारायण के लिये यहाँ चारायणः पद का प्रयोग किया गया है)

1 तत्प्रसंगात् चारायणः साधारणमधिकरणं पृथक् प्रोवाच। सुवर्णनाभः साम्प्रयोगिकम्।
घोटकमुखः कन्यासम्प्रयुक्तकम्। गोनर्दीयो भार्याधिकारिकम्। गोणिकापुत्रः पारदारिकम्।
कुचुमार औपनिषदिकमिति।।[18]
(अर्थ एवमेव)

4 पित्रा चारायणेनापि ताभ्यां संप्रेरितेन वै। आमुष्यायणपुत्राय दत्ते नारायणाय हि।।[19]

(चारायण एक महर्षि थे। उनकी दो पुत्रियां थी। पुत्रियों के आग्रह पर चारायण ने आमुष्यायण के पुत्र नारायण के साथ उनका विवाह कर दिया था। एक कन्या का नाम था भवानी तथा दूसरी का गौतमी)

6 द्रौणायनः (द्रोणस्य गोत्रापत्यम्) द्रोण का गोत्रापत्य वंशज, द्रोण+फक्। द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम्/4–1–103

प्रस्तुत सूत्र से प्राचीन मुनि द्रोण के गोत्रापत्य अर्थात् पौत्र अर्थ में ही 'फक' प्रत्यय का विधान किया गया है, पुनः महाभारत के द्रोण (द्रोणाचार्य) का अनन्तरापत्य (पुत्र) 'द्रौणायन' यह प्रयोग कैसे निष्पन्न होगा? इसका समाधान प्राचीन वैयाकरणों ने अपने–अपने ढंग से किया है। इस विषय में काशिकाकार लिखते हैं 'कथमनन्तरोऽश्वत्थामा द्रौणायन इत्युच्यते ? नैवात्र महाभारतद्रोणो गृह्यते, किं तर्हि? अनादिः, तत इदं गोत्रे प्रत्ययविधानम्। इदानीन्तनात्तु श्रुतिसामान्यादध्यारोपेण तथाभिधानं भवति।[20]

इस विषय में नारायणभट्ट लिखते हैं– 'चिरजीवित्वेन पौत्रादिकार्यकृत्त्वाद् द्रौणायनोऽश्वत्थामेति पुत्रेऽपि।[21]

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी की गोविन्दाचार्यकृत व्याख्या में कहा गया है किः अनादिरिह द्रोणः। अश्वत्थाम्न्यनन्तरे तूपचारात्। सूत्रोक्त द्रोण–शब्द अनादि द्रोण का वाचक है अर्थात् महाभारत में प्रसिद्ध द्रोण नहीं हैं। यदि ऐसा है तो द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा के लिये द्रोण–शब्द से अत इञ् से इञ् होकर द्रौणिः ऐसा प्रयोग मिलता है, फिर उसके लिये प्रकृत द्रौणायनः का प्रयोग कैसे हो सकता है? इसका समाधान यह है कि अश्वत्थामा के लिये तो द्रौणिः, द्रौणायन शब्दों का प्रयोग उपचारात् =लाक्षणिक प्रयोग समझना चाहिये।[22]

संस्कृत वाङ्गमय में द्रौणायनः के प्रयोग निम्न स्थानों पर प्राप्त होते हैंः

1 देशः सोऽयमरातिशोणितजलैर्यस्मिन् ह्रदाः पूरिताः
क्षत्रादेव तथाविधः परिभवस्तातस्य केशग्रहः।
तान्येवाहितशस्त्रघस्मरगुरूण्यस्त्राणि भास्वन्ति मे
यद्रामेण कृतं तदेव कुरुते द्रौणायनः क्रोधनः।।[23]
(द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के लिये यहाँ द्रौणायनः पद का प्रयोग किया गया है)

2 द्रौणायनो रौक्मायना पिशली चापि कायनिः। हंसजिह्वस्तथैतेषामार्षेयाः प्रवरा मताः।।[24]
(यहाँ पर भृगु के वंशजों में गोत्र प्रवर्तक ऋषियों के अतिरिक्त भृगु, वश्यव तथा दिवोदास नामक प्रवरों से सम्बद्ध ऋषिगण में से एक ऋषि का नाम द्रौणायन है उसके लिये द्रौणायनः पद का प्रयोग किया है)

7 द्रौणिः (द्रोणस्य गोत्रापत्यम्) द्रोण का गोत्रापत्य वंशज, द्रोण+इञ्। अत इञ्/4–1–95

द्रौणिः द्रौणायन के विकल्प का उदाहरण है अतः यहाँ पर भी वही समस्या है की किस प्रकार से द्रोण पुत्र द्रौणि सिद्ध होगा तो पूर्ववत् समाधान यहाँ भी है। प्रस्तुत उदाहरणों में द्रोण के अपत्य अश्वत्थामा के लिये द्रौणि पद आया है। यथाः

1 अपयातेषु पार्थेषु त्रयस्तेऽभ्याययू रथाः। कृतवर्मा कृपो द्रौणिः सायाह्ने रुधिरोक्षितम्।।[25]

2 समेत्य ददृशुर्भूमौ पतितं रणमूर्धनि। प्रतिजज्ञे दृढक्रोधो द्रौणिर्यत्र महारथः।।[26]

3 द्रौणिः क्रोधसमाविष्टः पितुर्वधमनुस्मरन्। पञ्चालानां प्रसुप्तानां वधं प्रति मनो दधे।।[27]

4 तेन व्याघातमस्त्राणां क्रियमाणमवेक्ष्य च। द्रौणिर्यत्र विरूपाक्षं रुद्रमाराध्य सत्वरः।।[28]

8 जैवन्तिः (जीवन्तस्य गोत्रापत्यम्) जीवन्त का गोत्रापत्य वंशज, जीवन्त+इञ्।

अत इञ्/4–1–95

1 काञ्चुकीयः – आभीरक! आभीरक गच्छ महासेनवचनात् प्रतीहाररक्षकं ब्रूहि – एष काशिराजोपाध्याय आर्यजैवन्तिरद्य दौत्येन प्राप्तः। अस्य सामान्यदूतसत्कारं पृष्ठतः कृत्वा सुखमिव निवेश्यताम्। यथा चातिथिसत्कारं जानीयात् तथा प्रयतितव्यम् इति।[29]

(काशिराज के उपाध्याय आचार्य जैवन्ति जो उदयन की सभा में दूत बनकर आए थे उनके लिये यहाँ जैवन्तिः पद का प्रयोग किया गया है)

9 वात्स्यः (वत्सस्य गोत्रापत्यं पुमान्) वत्स का गोत्रापत्य अर्थात् पौत्र आदि सन्तान, वत्स+यञ्।

गर्गादिभ्यो यञ्/4–1–105

प्रस्तुत सूत्र से हमें वत्स के गोत्रापत्य अर्थ में वात्स्य पद की सिद्धि प्राप्त होती है, परन्तु संस्कृत साहित्य के अवलोकन के पश्चात् शोधार्थी को गोत्रापत्य अर्थ में तो वात्स्य पद प्राप्त नहीं होता पर अपत्य अर्थ में वायुपुराण में वात्स्य पद प्राप्त हुआ है। गोत्र के एक प्रवर का नाम भी वात्स्य प्राप्त हुआ है। यथाः

1 वेणुहोत्रसुतश्चापि गार्ग्यो वै नाम विश्रुतः।
गार्ग्यस्य गर्गभूमिस्तु वात्स्यो वत्सस्य धीमतः।।[30]
(यहाँ राजा वत्स के पुत्र के लिये वात्स्यः पद का प्रयोग है इन दोनों राजाओं के पुत्र ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों वर्णों में हुये जो उत्साही व सिंह के समान पराक्रमी थे)

2 मांडव्यसगोत्रस्य वत्ससवात्स्यसवात्स्यायनस।[31]
(यहाँ वात्स्य गोत्रदेवी भद्रयोगिनी द्वारा अधिष्ठित माण्डव्य गोत्र के एक प्रवर का नाम है)

कई और वात्स्य प्राप्त हुए है जिनका वर्णन निम्न प्रकार से हैः

3 वात्स्यः श्रुतश्रवा वृद्धो जपस्वाध्यायशीलवान्।
कोहलो देवशर्मा च मौद्गल्यः समसौरभः।।[32]
(जनमेजय के सर्पयज्ञ के ब्राह्मणों में से एक वात्स्य के लिये यहाँ वात्स्यः पद का प्रयोग किया गया है)

4 पुलहस्य सुतो वात्स्यः शाण्डिल्यश्च रुचेः सुतः।
सावर्णिर्गौतमाज्जज्ञे मुनिप्रवर एव सः।।[33]
(यहाँ प्रख्यात पुलह ऋषि के पुत्र वात्स्य का वर्णन है)

5 मुदूगलो गोमुखश्चौव वात्स्यः शालीय एब च।
शिशिरः पञ्चमश्चासीन्मत्रेय! सुमहामुनिः।।[34]
(महर्षि शाकल्य के पाँच शिष्यों में से एक वात्स्य के लिये वात्स्यः पद का प्रयोग किया गया है)

10 गर्गाः (गर्गस्य गोत्रापत्यानि) गर्ग के बहुत गोत्रापत्य, गर्ग+यञ्। गर्गादिभ्यो यञ्/4–1–105

1 स्मृताः शैव्यास्ततो गर्गाः क्षत्रोपेता द्विजातयः। आहार्यतनयश्चौव धीमानासीदुरुक्षवः।।[35]
(भरतवंश के राजा भुवमन्यु के चार पुत्रों में से एक गर्ग के वंशधर गर्ग कहलाये उनके लिये ही यहाँ गर्गाः पद का प्रयोग किया गया है)

11 वत्साः (वत्सस्य गोत्रापत्यानि) वत्स के बहुत गोत्रापत्य, वत्स+यञ्। गर्गादिभ्यो यञ्/4–1–105

यहाँ वत्स के बहुत से गोत्रापत्य अर्थ में वत्साः पद प्राप्त है, परन्तु शोधार्थी को इस अर्थ में तोवत्साः पद की प्राप्ति नहीं होती है पर अन्य अर्थों में वत्साः पद का प्रयोग इस प्रकार हैः

1 तद्ब्रूत वत्साः किमितः प्रार्थयध्वे समागताः।
मयि सृष्टिर्हि लोकानां रक्षा युष्मास्ववस्थिता।।[36]

(हे वत्सो ! सम्बोधन अर्थ में यहाँ वत्साः पद का प्रयोग हुआ है)

2 अत्र भोक्तव्यमस्माभिः दिवारूढं क्षुधार्दिताः।
वत्साः समीपेऽपः पीत्वा चरन्तु शनकैस्तृणम्।।[37]
(बछड़े के लिये यहाँ वत्साः पद का प्रयोग किया गया है)

3 अद्यैव त्वदृतेऽस्य किं मम न ते मायात्वमादर्शितम्।
एकोऽसि प्रथमं ततो व्रजसुहृद् वत्साः समस्ता अपि।
तावन्तोऽसि चतुर्भुजास्तदखिलैः साकं मयोपासिताः।
तावन्त्येव जगन्त्यभूस्तदमितं ब्रह्माद्वयं शिष्यते।।[38]
(यहाँ भी बछड़े के लिये ही वत्साः पद का प्रयोग किया गया है)

4 वत्साः किमिति वै देवाश्चयुतालंकारविक्रमाः।
समागताः ससंतापा वक्तुमर्हथ सुव्रताः।।[39]
(यहाँ वत्स देवतागण सम्बोधन किया गया है अतः देवताओं के लिये यहाँ वत्साः पद का प्रयोग हुआ है)

12 माधव्यः (मधोः गोत्रापत्यं पुमान्) मधु का गोत्रापत्य ब्राह्मण, मधु+यञ्। मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः/4–1–106

मधु का गोत्रापत्य ब्राह्मण पौत्र माधव्य कहलाता है। यदि ब्रह्मणेत्तर है तो माधव कहलायेगा। इसी अर्थ में उपर्युक्त पद माधव्य को सिद्ध किया गया है परंतु इस अर्थ में शोधार्थी को संस्कृत साहित्य में माधव्य पद की प्राप्ति नहीं होती है। अन्य अर्थों में माधव्य का प्रयोग हुआ है। यथाः

1 केतक्यः सिन्धुवाराः च वासन्त्यः च सुपुष्पिताः।
माधव्यो गन्धपूर्णाः च कुंदगुल्माः च सर्वशः।।[40]
(यहाँ पर माधवी लता के लिये माधव्यः पद का प्रयोग किया गया है)

2 इतीदृशेन भावेन कृष्णे योगेश्वरेश्वरे।
क्रियमाणेन माधव्यो लेभिरे परमां गतिम्।।[41]
(भगवान कृष्ण के लिये यहाँ माधव्यः पद का प्रयोग किया गया है)

3 कटिदेशात्स्वर्णभूमिर्दिव्यरत्नखचित्प्रभा।
उदरे रोमराजिश्च माधव्यो विस्तृता लताः।।[42]
(यहाँ पर माधवी लता के लिये माधव्यः पद का प्रयोग किया गया है)

13 बाभ्रव्यः (बभ्रोः गोत्रापत्यं पुमान्) बभ्रु नामक ऋषि का गोत्रापत्य कौशिक ऋषि, बभ्रु+यञ्। मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः/4–1–106

बभ्रु का गोत्रापत्य कौशिक 'बाभ्रव्य' कहलाता है। यदि कौशिकेतर हो तो 'बाभ्रव' कहलाता है। शोधार्थी की दृष्टि में गोत्रापत्य का प्रयोग तो देखने में नहीं आया परंतु अपत्य अर्थ में पद्मपुराण/1.10.116 में देखने को मिला है। जैसेः

1 कामशास्त्रप्रणेता तु बाभ्रव्यः स तु बालकः।
पंचाल इति लोकेषु विश्रुतः सर्वशास्त्रवित्।।[43]
(पांचाल देश के निवासी **बभ्रु** के पुत्र आचार्य बाभ्रव्य जिन्होंने कामशास्त्र की रचना की उनके लिये यहाँ बाभ्रव्यः पद का प्रयोग किया गया है)

अन्य बाभ्रव्य का प्रयोग भी संस्कृत वाङ्गमय में प्राप्त होता है। यथाः

2 तस्य रश्मीन्प्रत्यगृह्णात्कण्डरीको द्विजर्षभः।

चामरं व्यजनं चापि बाभ्रव्यः समवाक्षिपत्।।[44]
(बाभ्रव्य पांचाल के लिये बाभ्रव्यः पद का प्रयोग किया गया है)

3 शौनकेदं वचः श्रुत्वा फाल्गुनान्नारदो मुनिः।
प्रहसन्निव बाभ्रव्यवदनं स निरैक्षत।।
स च बाभ्रव्यनामा वै हारीतस्यान्वयोद्भवः।
ब्राह्मणो नारदमुनेः समीपे वर्तते सदा।।[45]
(यहाँ हारीतवंशी श्रेष्ठ ब्राह्मण बाभ्रव्य के लिये बाभ्रव्यः पद आया है जो सर्वदा देवर्षि नारद के समीप रहते थे)

4 गोपालः प्रेषितः पुत्रो बाभ्रव्यो नाम नामतः।
कोपामर्षपराधीनचित्तवृत्तिस्ततो मुने।।[46]
(अग्निहोत्री ब्राह्मण मौलि के बाभ्रव्य नामक पुत्र के लिये यहाँ बाभ्रव्यः पद का प्रयोग है)

14 काप्यः (कपेः गोत्रापत्यम्) कपि नामक ऋषि का गोत्रापत्य आंगिरस, कपि+यञ्। कपिबोधदाङ्गिरसे/4–1–107

1 आत्रेयोमाण्टेः। माण्टिर्गौतमाद्गौतमो गौतमाद्गौतमो वात्स्याद्वात्स्यः शाण्डिल्याच्छाण्डिल्यः
कैशोर्यात्काप्यात्कैशोर्यः काप्यः कुमारहारितात्कुमारहारितो गालवाद्गालवो
विदर्भीकौण्डिन्याद्विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सनपातोबाभ्रवाद्वत्सन–पाद्बाभ्रवः पथः सौभरात्पन्थाः
सौभरोऽयास्यादाङ्गिरसादयास्य आङ्गिरस आभूतेस्त्वाष्ट्रादाभूतिस्त्वाष्ट्रो
विश्वरूपात्त्वाष्ट्राद्विश्व–रूपस्त्वाष्ट्रोऽश्विभ्यामश्विनौ दधीच आथर्वणाद्दध्यङ्ङाथर्वणोऽथर्वणो दैवादथर्वा
दैवो मृत्योः प्राध्वंसनान्मृत्युः प्राध्वंसनः प्रध्वंसनात्प्रध्वंसन एकर्षेरेकर्षिविप्रजित्तेर्विप्रजित्तिर्व्यष्टेर्व्यष्टिः सनारोः
सनारुः सनातनात्सनातनः सनगात्सनगः परमेष्ठिनः परमेष्ठी ब्रह्मणो ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे नमः।।[47]
(कपि के वंशज आचार्य के लिये यहाँ काप्यः पद का प्रयोग हुआ है)

2 सोऽब्रवीत्। पतञ्चलं काप्यं याज्ञिकांश्च वेत्थ नु त्वं काप्य तत्सूत्रं यस्मिन्नयं च लोकः परश्च लोकः
सर्वाणि च भूतानि संदृब्धानि भवन्तीति सोऽब्रवीत्पतञ्चलः काप्यो नाहं तद्भगवन्वेदेति।।[48]
(अर्थ एवमेव)

3 सोऽब्रवीत्। पतञ्चलं काप्यं याज्ञिकांश्च वेत्थ नु त्वं काप्य तमन्तर्यामिणं य इमं च लोकं परं च लोकं सर्वाणि च भूतान्यन्तरो यमयतीति सोऽब्रवीत्पतञ्चलः काप्यो नाहं तं भगवन्वेदेति।।[49]
(अर्थ एवमेव)

4 स्वायुधश्च सुधन्वा च स्तुत्यः पथ्यश्च कुंभज।
काप्यो नाढ्यस्तथा सूधः सरस्यो विन्ध्यमर्दन।।[50]
(ललिता देवी के श्रीपुर के रुद्रलोक के त्रयोदश आवरण में विराजित रुद्र देवों में से एक देव के लिये यहाँ काप्यः पद आया है)

15 गोतमाः (गोतमस्य गोत्रापत्यानि) गौतम ऋषि की बहुत सी सन्तान, पौत्र आदि, गोतम+अण्। ऋष्यन्धकवार्ष्णिकुरुभ्यश्च/4–1–114

1 योद्धासि क्रत्वा शवसोत दंसना विश्वा जाताभि मज्मना।
आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन्।।[51]
(सा०) गोतमपुत्रा नोधःप्रभृतयः

2 अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः।।[52]
(स्क०) गोतमनामानः (वें०) वयम् (द०) अतिशयेन स्तोतारः

(सा०) अस्य सूक्तस्य द्रष्टा गोतम ऋषिः। ऋषेरेकत्वेऽपि पूजार्थं बहुवचनम्
(मु०) अस्य सूक्तस्य द्रष्टा गोतम ऋषिः। ऋषेरेकत्वेऽपि पूजार्थं बहुवचनम्

3 अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः। ऐषु धा वीरवद्यशः।।[53]
(सा०) ऋषयः (द०) विद्वांसः

4 अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने। इन्द्र वाजाय घृष्वये।।[54]
(द०) प्रशस्ता गोर्वाग्विद्यते येषान्ते। गौरिति वाङ्नामसु पठितम्। (निघं०1.11)

16 अङ्गिरसः (अङ्गिरसः गोत्रापत्यानि) अङ्गिरस ऋषि की बहुत सी सन्तान पौत्र आदि। अङ्गिरस+अण्। ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च/4–1–114

1 प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यं शवसानाय साम।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्।।[55]
(स्क०) ऋषयः पणिभिरपहृतास्सतीः (वें०) पणिभिरपहृतानाम्
(सा०) पणिनाम्नासुरेणापहृतानां गवाम् (मु०) पणिनाम्नाऽसुरेणापहृतानां गवाम्
(द०) प्राणादिविद्याविदः

2 विरूपास इदृषयस्त इद्गम्भीरवेपसः। ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे।।[56]
(दु०) नि.11.17 ऋष्यनेकत्वे कतमास्त इति। अङ्गिरसः सूनवः। येऽङ्गिरसः सूनवस्त एते विवक्षिताः (स्क०म०) नि.11.17 अङ्गिरा नाम ऋषिस्तस्य
(वें०) अङ्गारेभ्योऽङ्गिरा जातस्ततोऽङ्गिरसो जाता इति
(सा०) पुत्राः। अङ्गिरसो ह्यङ्गारेभ्यो जाता इत्युक्तम्। 'अङ्गारेष्वङ्गिराः'(निरु.3.17) इति

3 अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।[57]
(उ०) अङ्गिरसः ये वा (सा०) अङ्गिरोनामकाः

4 अश्वासो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः।
आपो न निम्नैरुदभिर्जिगत्नवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः।।[58]
(उ०) नानारूपास्ते मरुतः अङ्गिरस इव सामगाः (वें०) अङ्गिरसः इव स्वनैः
(सा०) अङ्गिरस इव। सर्वदा सामगा इत्यर्थः

17 अगस्तयः (अगस्तस्य गोत्रापत्यानि) अगस्तय ऋषि की बहुत सी सन्तान पौत्र आदि, अगस्तय+अण्। ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च/4–1–114

1 अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम।।[59]
(वें०) वानप्रस्थविधिना अगस्त्यः
(द०) ये धर्मादन्यत्र न गच्छन्ति तेऽगस्तयस्तेषु साधुः

2 युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्यून्विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ।
अगस्त्यो नरां नृषु प्रशस्तः काराधुनीव चितयत्सहस्रैः।।[60]
(सा०) एतन्नामा महर्षिः (द०) अगमपराधमस्यन्ति प्रक्षिपन्ति तेषु साधुः

3 विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा।
तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार।।[61]
(दु०) नि.5.14 ऋषिः (वें०) अगस्त्यवसिष्ठौ नूनं सम्मन्त्र्यैव मानुष्यकमास्थिताविति
(द०) अस्तदोषः

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भारतीय सामाजिक गोत्र परंपरा क्या थी, कौन व्यक्ति अपत्य कहलाता था और कौन गौत्रापत्य इसे स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी में अपत्याधिकार प्रकरण के अन्तर्गत गौत्रापत्य अर्थ में आने वाले उदाहरणों के अर्थों के स्पष्टीकरण के साथ–साथ उन पदों का संस्कृत साहित्य में कहाँ–कहाँ प्रयोग हुआ है यह भी दर्शाया गया है जिससे पाठकों को विषय रूचिकर प्रतीत होगा। यह सिद्धांतकौमुदी के गौत्रापत्य प्रकरण का एक संक्षिप्त सार है जो कम उदाहरणों में विषय को पूर्णता प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. महाभारतम् / 14.92.53(6)
2. मत्स्यपुराणम् / 195.38
3. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 1.4.21
4. गर्गसंहिता / 7.49.5
5. गर्गसंहिता / 10.11.4
6. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 10.74.8
7. अग्निपुराणम् / 277.10
8. महाभारतम् / 2.4.24
9. महाभारतम् / 8.22.16
10. पाणिनीयकालीन भारतवर्श पृ॰ 97
11. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 9.21.19
12. रामायणम् / 7.100.1
13. पद्मपुराणम् / 5.116.80
14. महाभारतम् / 2.7.19(1)
15. महाभारतम् / 13.4.55
16. स्कन्दपुराणम् / 6.278.5
17. कामसूत्रम् / 1.5.22
18. कामसूत्रम् / 1.1.12
19. स्कन्दपुराणम् / 5.2.45.118
20. काषिका / 4.1.103
21. प्रक्रिया सर्वस्व पृ. 139
22. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी / गोविन्दाचार्यकृत व्याख्या / पृ॰ 58
23. वेणीसंहारम् / 3.33
24. मत्स्यपुराणम् / 195.41
25. महाभारतम् / 1.2.292
26. महाभारतम् / 1.2.293
27. महाभारतम् / 1.2.297
28. महाभारतम् / 1.2.299
29. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् / अंक 2

30. वायुपुराणम् / 92.74
31. स्कन्दपुराणम् / 3.2.21.5
32. महाभारतम् / 1.53.9
33. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् / 1.10.11
34. विष्णुपुराणम् / 3.4.22
35. मत्स्यपुराणम् / 49.38
36. कुमारसंभवम् / 2.28
37. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 10.13.6
38. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 10.14.18
39. लिङ्गपुराणम् / 98.6
40. रामायणम् / 4.1.77
41. श्रीमद्भागवतपुराणम् / 10.90.25
42. गर्गसंहिता / 3.9.15
43. पद्मपुराणम् / 1.10.116
44. हरिवंशपुराणम् / 1.24.18
45. स्कन्दपुराणम् / 1.2.54.9,10
46. मार्कण्डेयपुराणम् / 109.6
47. शतपथब्राह्मणम् / 14.7.3.28
48. शतपथब्राह्मणम् / 14.6.7.2
49. शतपथब्राह्मणम् / 14.6.7.3
50. ब्रह्माण्डपुराणम् / 3.34.37
51. ऋग्वेदः / 8.88.4
52. ऋग्वेदः / 1.78.1
53. ऋग्वेदः / 4.32.12
54. ऋग्वेदः / 4.32.9
55. ऋग्वेदः / 1.62.2
56. ऋग्वेदः / 10.62.5
57. ऋग्वेदः / 10.14.6
58. ऋग्वेदः / 10.78.5
59. ऋग्वेदः / 1.179.6
60. ऋग्वेदः / 1.180.8
61. ऋग्वेदः / 7.33.10

****